हिन्दी विभाग

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या :- 06

घनानंद का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण

घनानंद मूलतः एक प्रेमी कवि थे। जिस युग में घनानंद ने लेखनी उठाई उस युग की प्रवृत्ति भी शृंगारिक थी। उस युग के अधिकांश कवियों ने न केवल सैद्धांतिक धरातल पर शृंगार की रसराजता घोषित की, बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी इसी के अंग-उपांगों की उपासना की। फिर भी, घनानंद और उनके समसामयिक अन्य कवियों में बड़ा भारी अंतर है।

डॉ० नगेन्द्र ने रीतिमार्गीय प्रेम शृंगार की चार मुख्य विशेषताएँ बताई हैं, रीतिमार्गीय प्रेम शृंगार का मूलाधार रसिकता है प्रेम नहीं। यह रसिकता शुद्ध ऐन्द्रिक आत्म उपभोग प्रधान है इसीलिए वासना को अपने प्राकृतिक रूप में ग्रहण करते हुए इसी की तुष्टि को निश्चल रीति से प्रेम रूप में स्वीकार किया गया है उसके न अध्यात्मिक रूप देने का प्रयत्न किया गया है, न उदात्त और परिष्कृत करने का।

यह श्रृंगार उपभोग प्रधान एवं गार्हस्थिक है
यह एक और बाजारी इश्क से भिन्न है
दूसरी ओर रोमानी प्रेम की साहसिकता
भी प्रायः इसमें नहीं मिलती। इसीलिए
इसमें तरलता और छटा अधिक है,
आत्मा की पुकार और तीव्रता कम।

घनानंद के प्रेम गम्भीर है,
बिहारी की तरह वे प्रेम को चौगान
का खेल नहीं मानते बल्कि वे प्रेम
को एक सीधा स्नेहपूर्ण मार्ग मानते है
जहाँ तनिक भी चतुराई के लिए स्थान
नहीं है प्रेम के पथ पर वे ही
सच्चे लोग चल सकते है जो अपना
सब कुछ ~~भय~~ गवाने के लिए तैयार है,
जो कपटी है, बुरे आचरण वाले है वे
इस रास्ते पर निर्भय होकर नहीं चलते;
प्रेम की बस यही एक डगर है दूसरी और
नहीं-

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु
सयानप बाँकु नहीं।
तहाँ साँचे चले तजि आपनपौ झझके कपटी
जे निसांक नहीं।

इन पंक्तियों में प्रेम के सत्यनिष्ठ मार्ग के साथ साथ प्रेम की निष्ठुरता का भी जिक्र किया है जो प्रिया का मन तो हर लेता है परन्तु अपना मन देने में संकोच करता है। यहाँ प्रिया के समक्ष प्रेम का आदर्श रखकर कवि दिखा रहा है कि वह इसका पालन नहीं कर रहे हैं। प्रेम का मार्ग तो सीधा और सरल है इस पर सज्ञानी से अज्ञानी आदमी भी चल सकता है।

घनानंद का प्रेम भावात्मक है, शारीरिक नहीं। संयोग में शरीर सहवास की चेष्टाओं का तथा वियोग में उसके हाव भाव का वर्णन कवि ने नहीं किया है। अन्तर हृदय के भावों का ही विश्लेषण किया है। प्रिय के बिछड़ने पर तथा मिलन पर प्रेमी शांति का अनुभव नहीं करता.

बिछुरै मिलै प्रियतम सांति न मानै।

संयोगकाल में घनानंद की अनुभूति रीतिमार्गी कवियों की भांति कुंठित नहीं होती। वह और तीक्ष्णतर होती जाती है उसका कारण प्रेम का भावना की भावात्मकता है। वियोग में और लोग शरीर संयोग के

सुखों का स्मरण करते हैं किन्तु घनानंद आंतरिक पीड़ा की विविध अभिव्यक्ति करते हैं जहाँ मौन में व्याकुल प्राण पुकारते हैं:—

वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि वहै
लड़कीली बानि आनि उर मैं अरति है,

यहाँ प्रिय की मुस्कान, मधुर वाणी, ललक युक्त मुद्रा की स्थिति का चित्रण हुआ है। प्रिय का यह रूप उसके हृदय में बसा हुआ है। उसकी बाँसुरी बजाने की मुद्रा, उसकी हँसी हृदय से चाहकर भी हटती नहीं उसकी चतुराई से देखने की कला उसका रंगीलापन क्षण मात्र को भी भुलाया नहीं जाता। आनंद प्रदान करने वाली प्राण प्रियतम सुजान की याद आने से प्रिय अपने होश हवास खो बैठता है प्रेम के प्रति यह पूर्ण समर्पण ही घनानंद की विशेषता है।

प्रस्तुतकर्त्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० — 829227104।

दिनांक
24/10/2020